# ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 अंक-9 अगस्त-I, 2015 पाक्षिक माउण्ट आबू ₹8.00


# विधानसभा बना प्रथम द्रष्टा राजयोग के विधान का

## छत्तीसगढ़ विधानसभा द्वारा राजयोग प्रशिक्षण का आयोजन

## राजयोग प्रशिक्षण के लिए शान्ति सरोवर में पहुंचे छत्तीसगढ़ के मंत्रीगण व विधायकगण

**लोकतंत्र के चार स्तंभ में से एक स्तंभ ने आखिर एक कदम आगे बढ़ा ही दिया, जिन्होंने आध्यात्मिकता के प्रथम और अंतिम स्तंभ राजयोग का एक साथ प्रशिक्षण लिया हो, जो अपने आप में एक इतिहास है और इसका साक्षी है 'छत्तीसगढ़ विधानसभा'।**

**रायपुर-छ.ग.।** राजयोग की ओर कदम रखने के लिए सबसे पहले स्व-अस्तित्व को जानना व समझना बहुत ज़रूरी है। स्व-अस्तित्व के स्वरूप का परमसत्ता के साथ संबध जोड़ना ही राजयोग कहलाता है। उनसे विपरीत शब्द वियोग अर्थात् बिछुड़ना। इस विधि से हम परमात्मा से सर्वशक्तियों व गुणों को अपने में अर्जित कर सकते हैं। क्योंकि परमात्मा ही सर्वशक्तियों व गुणों का स्रोत है। मानव में व्याप्त अशान्ति और शोक राजयोग द्वारा ही मिट सकता है और वो अपने जीवन में प्रसन्न रह सकता है। उक्त उद्गार मंत्रियों, विधायकों एवं विधानसभा के वरिष्ठ अधिकारीगणों के लिए शान्ति सरोवर में विधानसभा द्वारा आयोजित राजयोग प्रशिक्षण कार्यक्रम में ब्र.कु. रश्मि ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि राजयोग का अभ्यास करने के लिए साधन, साध्य और साधना - इन तीन बातों की पहचान ज़रूरी है। राजयोग हमें परमात्मा के निकट ले जाता है।

उन्होंने बताया कि आजकल योग के नाम पर तरह तरह के व्यायाम और आसन आदि करना सिखलाया जा रहा है। इससे शारीरिक रूप से तो स्वस्थ हो सकते हैं परंतु मानसिक स्वास्थ्य के लिए राजयोग का होना बहुत ज़रूरी है। इससे परमात्मा का सत्य परिचय व परमात्मा से शक्तियां प्राप्त होती हैं। इस तकनीक को यदि हम समझ लेते हैं तो हम अपने कार्यव्यवहार में रहते हुए भी बहुत सरल तरीके से कर सकते हैं। इससे पूर्व ब्र.कु. सविता ने सभी अतिथियों का तिलक व पुष्पों से स्वागत किया। क्षेत्रीय प्रशासिका ब्र.कु. कमला ने सुंदर शब्दों में सभी मेहमानों का स्वागत किया। विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल ने सभी का आभार प्रकट किया।

# आध्यात्मिक विरासत, योग द्वारा ही विश्व परिवर्तन संभव- कल्याण सिंह

**ज्ञानसरोवर।** राजस्थान व हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम कल्याण सिंह ने ब्रह्माकुमारी संस्था के महिला प्रभाग द्वारा `परिवर्तन के लिए नारी की भूमिका' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में कहा कि नारी की उपेक्षा करके यदि कोई समाज सोचे कि वह प्रगति कर लेगा तो यह बहुत बड़ी भूल है। नारी जननी होने के नाते तो पूज्यनीय है ही। जहां नारी की पूजा होती है वहीं देवताओं का निवास होता है। वहां समृद्धि व शांति होती है। इस संस्था के भाई-बहनें श्रेष्ठ समाज के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। भारत अपनी प्राचीन समृद्ध संस्कृति, आध्यात्मिक विरासत व योग पद्धति से विश्व में विख्यात होगा। यहाँ दिये जाने वाले ज्ञान के प्रकाश से विश्व आलोकित हो रहा है। अध्यात्म वह शक्ति है जो मानव में श्रेष्ठ चिन्तन और कर्म कुशलता का विकास करके सशक्त राष्ट्र का निर्माण करता है। जिस देश के नागरिक चरित्रवान व कर्मठ होंगे वह अवश्य ही अपनी स्वर्णिम आभा को प्राप्त करेगा। ब्र.कु. चक्रधारी,अध्यक्षा,महिला प्रभाग ने अपने प्रवचन में कहा कि आध्यात्मिक शिक्षा द्वारा ही देश और विश्व में परिवर्तन लाया जा सकता है। आत्मिक भान उत्पन्न होगा तो स्त्री-पुरूष की दूरी खत्म हो जायेगी, अपनत्व की भावनायें जागृत होंगी। जहाँ सम्मान व स्नेह होता है वहाँ विकास स्वतः ही होता है।

`परिवर्तन के लिए नारी की भूमिका' विषय पर आयोजित त्रिदिवसीय कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर सुभारंभ करते हुए ब्र.कु. डॉ सविता, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. चक्रधारी व अतिथिगण।

### जीवन की परिभाषा की भाषा यहीं है

हरियाणा की पुलिस सुपरिन्टेंडेंट सुमन मंजरी ने कहा कि आध्यात्मिकता का अर्थ केवल एकाकी वैराग्य का जीवन जीना नहीं वरन अध्यात्म तो नवीन सकारात्मक ऊर्जा व उमंग-उत्साह से जीवन जीने तथा दूसरों का जीवन भी श्रेष्ठ बनाने की पद्धति है, यह परिभाषा यहां आकर समझ में आई। जिन नारियों की शक्ति को समाज नहीं पहचान पाया उसे ब्रह्मा बाबा ने पहचाना। यहां आकर मुझे परिवर्तन का विश्वास व एक आशा की किरण दिखाई दे रही है।

### पहले खुद तो असमानता का भाव हटाओ

स्नेहल अंबेकर, मेयर, मुम्बई ने कहा कि परिवर्तन हमें घर से शुरू करना होगा। अभी अपने बच्चों (बेटा-बेटी) के व्यवहार में समानता लानी होगी। क्योंकि माँ ही असमानता का व्यवहार करती है। समाज में परिवर्तन हो रहा है तो होगा ही। लेकिन यहां पर ब्रह्माकुमारी बहनें खुद के साथ-साथ सर्व का विकास व भाग्य सशक्त बना रही हैं। यहां का समर्पण भाव देखकर लगता है कि भारत में पुनः शांति स्थापित होगी । जीवन में आध्यात्मिकता के ज़रिए ही यह संभव हो पायेगा।

### नारी गुणी व सभी कारणों का समाधान भी

अनीता भदेल, महिला व बाल विकास मंत्री, राजस्थान सरकार ने कहा कि समाज के परिवर्तन के लिए नारी की भूमिका अति आवश्यक है। भारत की संस्कृति आज भी बची हुई है, उसका आधार है नारी। समाधान वहीं से ढूंढ़ो जहाँ उसका कारण है। नारी सभी गुणों का समुच्य है। अपने कर्त्तव्य को याद रखना है ना कि अधिकार को। चारित्रिक नैतिकता, ईमानदारी ये कहने की चीज़ नहीं है, बल्कि जीवन में धारण करने के लिए है।

### स्वयं की पहचान के साथ स्व को भी पहचानो

जय श्री पटेल, सांसद,मेहसाना ने कहा कि स्वयं की पहचान रखें, लेकिन साथ-साथ यह भी ध्यान रखें कि समय परिवर्तन हो रहा है। परिवर्तन के युग में महिलाओं को भी अपना परिवर्तन करना है। आज महिलायें आर्थिक, सामाजिक व वैज्ञानिक हर क्षेत्र में है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को अपने प्रति हिंसा को रोकने के लिए सशक्त होना होगा। अपने-अपने क्षेत्र में आगे आएं और महिलाओं व बच्चों के विकास के लिए दृढ़ता से कार्य करें।

### सहयोग के साथ, करो ज़िम्मेवारी का एहसास

सुसी वी शाह पूर्व अध्यक्षा महिला आयोग महाराष्ट्र ने कहा कि देश केवल महिलायें ही बदल सकती हैं। देश की बेटियाँ व माँ आगे बढ़ी हैं, इससे प्रतीत होता है कि देश व समाज का विकास हुआ है। हम सब महिलाओं को एक होकर और एक दूसरे के साथ सहयोग देना होगा। अपने अधिकारों को जानना आवश्यक है लेकिन उससे ज़्यादा ज़रूरी है अपने कर्त्तव्य के प्रति ज़िम्मेवारी पूर्वक जागरुक होना।